रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के0 पी0 सिटी –67/2024–26

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निषपक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया
(भारत सरकार
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा आदेश प्राप्त
एक मात्र संगठन)
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक इसके स्वयं सदस्य बनें
एवं सदस्यता हेतु अभियान चलायें।

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 47 • अंक – 20 एवं 21 • कानपुर 1 से 15 नवम्बर 2025 • प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी • वार्षिक मूल्य ₹ 100

समय की पुकार विवादों से हटकर

कार्य को दें वरीयता

इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े सभी व्यक्ति कभी न कभी यह सोचते ही होंगे कि वह दिन कब आयेगा जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का नाता विवादों से दूर होगा,पता नहीं क्या बात है ? इतनी सारी चिकित्सा पद्धतियां हैं मान्यता प्राप्त और गैर मान्यता प्राप्त, कहीं पर कोई विवाद नज़र नहीं आता है, लेकिन जब हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति पर नज़र डालते हैं तो ऐसा लगता है कि शायद इस चिकित्सा पद्धति का विवादों से ही नाता है।

इस चिकित्सा पद्धति के अन्वेषक महात्मा मैटी ने जब इस चिकित्सा पद्धति को मूर्त रूप दिया तो उस समय भी हैनीमैन के समर्थकों ने इस पद्धति के सिद्धान्त पर विवाद खड़ा कर दिया था, यह तो महात्मा मैटी की दृढ़ता का परिणाम था कि वह पीछे नहीं हटे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपनी सोच पर ही स्थिर रखा, फिर इस चिकित्सा पद्धति की औषधियों पर विवाद खड़ा किया गया, विवाद का स्तर यहां तक बढ़ गया था कि मैटी के अलावा अन्य लोग भी इस पद्धति के अन्वेषण पर अपना दावा ठोकने लगे थे।

साउटर ने बाकायदा इस चिकित्सा पद्धति को अपनी सम्पत्ति मान ली थी और अपने हिसाब से इस पद्धति का प्रसार किया, हिन्दुस्तान में इलेक्ट्रो होम्योपैथी पद्धति कब आयी और कौन लाया ? इस पर भी विवाद खड़ा किया गया, कुछ लोग कहते हैं कि भारतवर्ष में चिकित्सा पद्धति का पदार्पण फादरमुलर के प्रयासों से हुआ था और कुछ लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तान में इस चिकित्सा पद्धति को लाने का श्रेय पश्चिम बंगाल के चिकित्सक हलधर को जाता है, कुछ नये लोग डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना को इसका श्रेय देते हैं।

आपको बता दें कि स्व0 बल्देव प्रसाद सक्सेना की कर्मभूमि विक्टोरिया स्ट्रीट (नक्खास) लखनऊ रही है, इसके बाद जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कार्य करने की बात आयी तो लोग कहते हैं कि जितना काम स्व0 नन्द लाल सिन्हा ने किया उतना काम किसी ने नहीं किया परन्तु दावा करने वाले इसे नहीं स्वीकारते हैं प्रथम भारतीय इलेक्ट्रो होम्योपैथ डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना के समर्थक सर्वाधिक काम करने का श्रेय स्वयं लेना चाहते हैं।

समय बीता देश में धीरे–धीरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की जड़ें मज़बूत होने लगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास होने लगा बहुत सारी संस्थायें बनने लगीं और योजनाबद्ध ढंग से कार्य होने लगे समाज में इलेक्ट्रो होम्योपैथों और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सम्मान मिलने लगा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य होने लगा साहित्य से लेकर औषधियों के निर्माण के क्षेत्र में बहुत तेज़ी से कार्य होने लगा और इस तेज़ी का परिणाम यह हुआ कि सरकार की निगाह इस चिकित्सा पद्धति पर पड़ी, सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रहे कार्यों का गम्भीरता से निरीक्षण करने लगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए होम्योपैथी के लोगों में ईष्या का भाव जागृत हुआ और होम्योपैथी के नेताओं ने आरोप लगाना शुरू कर दिया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी वाले होम्योपैथी शब्द का बेजा लाभ उठा रहे हैं।

नेताओं की इस मांग का असर यह हुआ कि तत्कालीन केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद के सचिव डा0 ललित वर्मा ने एक आदेश जारी कर नया विवाद खड़ा कर दिया, कुछ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ऐसे तत्व भी थे जो इस सरकारी आक्रमण से भयभीत हो गये, उन्होंने अपनी संस्थाओं का नाम बदल दिया कुछ इलेक्ट्रोपैथ हो गये कुछ इलेक्ट्रो कॉम्पेलक्स होम्योपैथ हो गये और कुछ ने तो अपने आप को इलेक्ट्रो हर्बल पैथ घोषित कर दिया परन्तु हम ठहरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रबल समर्थक हमें अपने से ज़्यादा इलेक्ट्रो होम्योपैथी और उसके सिद्धान्तों पर भरोसा है हम अडिग रहे लड़े और विवादों का शमन किया, समय बीतता गया और रोज़ नई–नई परिस्थितियां बनती गयीं और हर नयी परिस्थिति एक नये विवाद को जन्म देती गयी।

1990 में भी एक विवाद हुआ जो हमें बदनाम करने की साजिश थी हमने डटकर सामना किया और साजिश का भण्डाफोड़ हुआ, जब–जब आन्दोलन और अन्य रचनात्मक कार्य तेज़ किये गये सरकार में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बदनाम करने की साजिश रची जाती रही, विवादों को जन्म दिया जाता रहा किन्तु परन्तु से हटकर हम इन सब सारी परिस्थितियों से बेपरवाह आगे बढ़ते रहे, इसी का परिणाम रहा कि हम आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी को उस स्थान तक पहुँचा पाये जहां पहुँचाना चाहिये।

बात वर्ष 1998 की है जब दिल्ली हाईकोर्ट, नई दिल्ली द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नियमित करने के लिए कुछ दिशा निर्देश जारी किये गये तब भी विवादों को जन्म दिया गया, हम कहाँ–कहाँ तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विवादों की चर्चा करें बस कष्ट होता है कि यदि विवाद बाहरी लोगों द्वारा पैदा किया जाये तो उनसे लड़ने में मज़ा आता है लेकिन जब विवाद अपनों द्वारा ही किया जाय तो ठीक नहीं लगता है,

मुझे तो अपनों ने ही लूटा, गैरों में कहां दम था!
मेरी किश्ती वहां डूबी, जहां पानी कम था!!

आज स्थिति यह है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सम्मानजनक स्थिति बनती जा रही है लेकिन विवादों से पीछा नहीं छूटता, यदि चर्चा में रहना है तो विवादों में रहना चाहिये यह सोच राजनीतिज्ञों की तो हो सकती है परन्तु हम सामाजिक आदमियों के लिए नहीं है, सबसे ज़्यादा विवाद तो समाचार–पत्रों द्वारा वर्ष 2004 में खड़ा किया गया जब भारत सरकार स्वास्थ्य मन्त्रालय द्वारा 25 नवम्बर, 2003 द्वारा जारी एक आदेश को गलत व्याख्यित होने के कारण पूरे देश को जो कष्ट झेलना पड़ा उसे सोचकर ही रूह काँप उठती है, यद्यपि वह कोई वास्तविक विवाद नहीं था कुछ लोगों की गलत सोच के कारण मामले ने इतना तूल पकड़ा कि पूरे देश के इलेक्ट्रो होम्योपैथ हिल कर रह गये, ऐसा लगने लगा कि क्या 50 साल की मेहनत एक झटके में ख़त्म हो जायेगी ? लेकिन सबका सहयोग हमारा संयम व दूरगामी नीति के तहत जो प्रयास किये गये उनके सुखद परिणाम देखने को मिले।

वर्ष 2003 से 2010 तक जो स्थिति थी वह बहुत गम्भीर थी सरकारी और न्यायालयी आदेश से लगातार दो चार होना पड़ा विवादों से बचते हुए किसी प्रकार से समय पार किया गया और वह शुभ दिन भी आया जब सरकार को कहना पड़ा कि.....
"भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन पर किसी तरह की कोई रोक का प्रस्ताव नहीं है" इस स्पष्टीकरण के आते ही सबने राहत की सांस तो ली लेकिन यहाँ पर भी वर्चस्व की लड़ाई शुरू हो गयी।

एक संगठन ने दावा किया कि 5–5–2010 के आदेश का उपयोग केवल उन्हीं की संस्था कर सकती है, हमने तब भी नये विवाद को जन्म नहीं दिया था बल्कि धारा को बदलते हुए 21 जून, 2011 को वह ऐतिहासिक आदेश लाने में सफ़ल हुए जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इतिहास में मील का पत्थर है, कल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में क्या होगा ? इसकी तो कल्पना हम नहीं करते लेकिन जो कुछ भी होगा उसके आधार में 21 जून, 2011 ही होगा और आपको बता दें कि 21 जून, 2011 का आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया के नाम है और यह इसी संगठन के प्रयासों का परिणाम है।

यहां पर यह बताना उचित होगा कि 5–5–2010 का आदेश मात्र स्पष्टीकरण है प्रयोगिक नहीं, जबकि 21 जून, 2011 का आदेश **आदेश है** जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान की अनुमति प्रदान करता है।

इस आदेश को देश के हर राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को अपने यहां क्रियान्वित भी करना है, इस आदेश को लागू करवाने के लिए बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने प्रयास शुरू किये और 6 माह के अन्तराल के बाद 4 जनवरी, 2012 को उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अधिकार प्राप्त चिकित्सा पद्धति के रूप में स्थापित कराने में सफ़लता भी प्राप्त की, इस आदेश के आते ही प्रदेश के अन्य संस्था के संचालकों ने नये विवाद को जन्म देने का प्रयास किया लेकिन हमने तब भी कहा था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी सबके लिए है इसकी खुली घोषणा बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा खुले मंच से की गयी थी, हमने खुले मन से सबको समाहित करने का प्रयास किया लेकिन जिसको नहीं मानना है वह नहीं मानते, विवादों को जन्म देते ही रहते हैं लेकिन इन सब चिन्ताओं से परे हम सफ़लता की दृष्टि को अंगीकार करते हुए आगे बढ़े इसी का परिणाम है कि आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी मज़बूत से मजबूत स्थिति की तरफ़ बढ़ रही है हमारी टीम ने प्रदेश ही नहीं अपितु देश के अनेक माननीय मंत्रियों से लेकर सांसदो, विधायकों तक सीधी वार्ता की है, शीघ्र ही हम उ0 प्र0 में सरकारी बोर्ड के गठन कराने में सफ़लता प्राप्त कर लेंगें, बहुत हो चुका, अब विवादों को विराम दें, काम करने वाले का नाता विवाद से नहीं काम से होता है ।

बदलने लगी सोच बदलने लगे लोग

यह सामान्य सी बात है कि समय के साथ–साथ लोगों की सोच बदलती है परन्तु सोच के साथ जब लोग बदलते हैं तो एक नई व्यवस्था निर्मित होती है।

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सोच के साथ–साथ लोग भी बदलते जा रहे हैं, कुछ वर्षों पहले तक जो लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े थे और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये कार्य करते थे उनकी सोच बहुत सकारात्मक हुआ करती थी, विखण्डन या विभाजक भावनाओं का लेश मात्र भी दर्शन नहीं होता था, लेकिन ज्यों–ज्यों समय बदलता गया, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति में भी परिवर्तन होने लगा हमारे साथियों के विचारों में व कार्य प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन होने लगा और इस परिवर्तन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा व दशा दोनों बदलकर रख दी, पहले भावनाओं में श्रद्धा, समर्पण व कर्तव्य निष्ठा के जो दर्शन होते थे धीरे–धीरे उसका लोप होने लगा है हम इस परिवर्तन से न तो विस्मित हैं और न ही अचंभित, यह सत्य है कि आज का युग अर्थ युग है और हर क्रियायें आर्थिक हो रही हैं आर्थिक होना बुरी बात नहीं है, यह कटु सत्य है कि बिना अर्थ के कोई काम सम्भव नहीं है, परन्तु अर्थ से ही सबकुछ सम्भव हो यह भी सत्य नहीं है।

आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिये जिस समर्पण के भाव का होना आवश्यक है उस भाव के दर्शन अब कम होते हैं, आर्थिक क्रियाओं की पूर्ति के लिये हमारे साथियों द्वारा जो येन–केन–प्रकारेण कार्य हो रहे हैं वह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को जो क्षति पहुँचा रहे हैं यदि समय रहते ऐसे कार्यों पर रोक नहीं लगाई गई तो जो क्षति होगी उसकी भरपाई आसान नहीं होगी, धीरे–धीरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जिस विकास की राह पर आगे बढ़ रही है वहां पर एक सकारत्मक सोच की आवश्यकता है, अधिकार और कर्तव्य के पचड़े में न पड़ते हुये हम सभी को कर्तव्य के पथ पर डट जाना चाहिये और कर्तव्य के द्वारा ही मार्ग में आने वाले प्रत्येक अवरोधों को दूर करते हुये एक नई राह बनानी होगी, इस राह को बनाने के लिये हमें किसी के पहल की प्रतीक्षा नहीं करनी है बल्कि इसे अपना कर्तव्य मानकर प्रारम्भ कर देना है, जो लोग व्यवस्थाओं और अधिकारों का बहाना बना कर कर्तव्य मार्ग से विलग हो रहे हैं वह कदाचित इलेक्ट्रो होम्योपैथी के शुभेक्षु नहीं हैं और न ही ऐसे लोगों से किसी परिवर्तन की आशा की जा सकती है, आज कार्य करने का वातावरण है, अवसर भी है हम सब को इस वातावरण का और इस अवसर का भरपूर लाभ उठाना चाहिये, आप देख ही रहे हैं कि परिस्थितियां पल–पल बदल रही हैं पता नहीं कब ? कहां ? कौन सा लाभ हम सब को प्राप्त हो जाये, जिस गति से सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के लिये विचार प्रकट कर रही है, वह इस बात का संकेत दे रही है कि देर–सवेर ही सही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये अच्छे से अच्छे सन्देश प्राप्त होने हैं परन्तु इन सन्देशों को पाने के लिये सामूहिक प्रयास करने होंगे हमारा दृष्टिकोण रचनात्मक होना चाहिये साथ ही साथ हमारे विश्वास में किन्तु अथवा परन्तु का कोई स्थान नहीं होना चाहिये।

धीरे–धीरे लोगों के विचारों में परिवर्तन हो रहा है कल तक हमारे जो साथी हमारे विचारों से सहमत नहीं दिखते थे आज वही प्रत्यक्ष न सही परन्तु मौन समर्थन तो दे रहे हैं, हमारा दृढ़ विश्वास है कि जो आज मौन हैं कल वे मुखरित भी होंगे और हम प्रसन्न मन से उनके विचारों का स्वागत करेंगे, कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक चिकित्सा पद्धति है इस पर किसी का एकाधिकार नहीं है, जो लोग अपने मन में यह भ्रम पाले हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर हमारा एकाधिकार है उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि भ्रम जब टूटता है तो बहुत कष्ट होता है।

देखा जाये तो बर्चस्व भी ज़्यादा दिनों तक नहीं रहता है, हर एक की अपनी एक सीमा होती है, सीमा रहित तो कोई होता नहीं है, जिस प्रकार समुद्र भले ही असीमित जलराशि का स्वामी क्यों न हो परन्तु उसकी भी अपनी सीमायें हैं, प्रकाश अन्धकार पर विजय ज़रुर पाता है लेकिन उसकी भी सीमायें हैं ठीक उसी प्रकार हम सबकी भी सीमायें हैं।

इसलिये इन्हीं सीमाओं के अन्दर रहते हुये विकास के कार्य करने हैं तभी हम उत्तर प्रदेश में सरकारी बोर्ड के गठन हेतु मार्ग प्रशस्त कर पायेंगे।

डा0 एम0 एच0 इदरीसी 50 वर्षों में विभिन्न मुद्राओं में

अपने 50 वर्ष बोर्ड के कार्यकाल में डा0 इदरीसी ने न केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये समय दिया बल्कि सामाजिक साहित्यिक अभिरुचि को भी दर्शाया, राजनैतिक कौशल से भी आप परिपूर्ण हैं। सबको साथ लेकर चलना और सबका सम्मान करना यह सब यहाँ पर प्रदर्शित चित्र स्वंय स्पष्ट करते हैं, युवावस्था से षष्टीपूर्ति तक के दुर्लभ चित्र गज़ट के माध्यम से आप तक पहुँचाने का प्रयास है।

डा0 एम0 एच0 इदरीसी 50 वर्षों में विभिन्न........पेज 2 से आगे

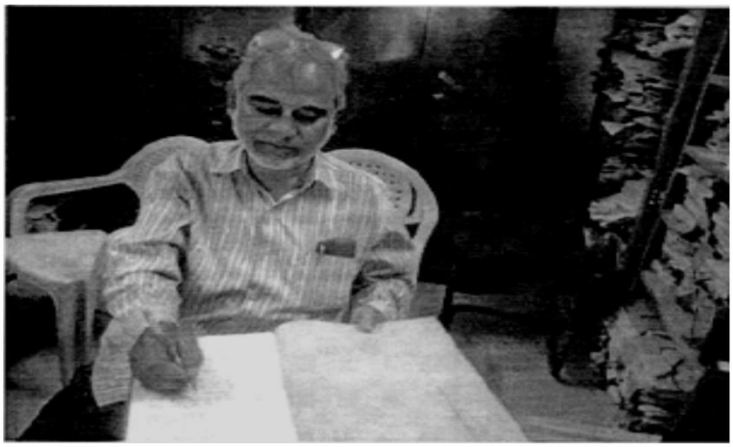

डा0 एम0 एच0 इदरीसी 50 वर्षों में विभिन्न.......पेज 3 से आगे

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

निष्पक्ष समाचारों के लिये ही

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों की दुनिया में जिसपर आप करें भरोसा

आपके अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाला एक मात्र संगठन

1978 से

दीपावली की हार्दिक शुभकामनायें

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।